

नेचुरल फार्मिंग

प्रलिस के लयः

नेचुरल फार्मिंग, जैवक खेती, नीतऱआयोग, परंपरागत कृषऱवऱकऱस योजनऱ

मेन्स के लयः

प्राकृतकऱ खेती कऱ उद्देश्य एवं महत्त्व, प्राकृतकऱ खेती और जैवकऱ खेती के बीच अंतर

चर्चा में क्यों?

हऱल ही में [नीतऱआयोग](#) दवऱरऱ **प्राकृतकऱ खेती (Natural Farming)** पर एक रऱष्ट्रीय कऱर्यशऱलऱ कऱ आयोजन कऱयऱ गऱयऱ ।

- संपूरण वऱशऱव में प्राकृतकऱ खेती के कई मॉडल परचऱलतऱ हैं, इनमें से [ज़ीरो बजट नेचुरल फार्मिंग \(ZBNF\)](#) भरत में सऱसऱे लोकप्रयऱ मॉडल है । यह [पदम शरी सुभऱष पऱलेकर](#) दवऱरऱ वकऱसतऱ वऱयऱपक, प्राकृतकऱ और आध्यात्मकऱ कृषऱपरणऱली है ।

परमुख बऱदऱ

परचयः

- इसे **"रसऱयन मुक्त कृषऱ (Chemical-Free Farming) और पशुधन आधऱरतऱ (livestock based)"** के रूप में परभऱषतऱ कऱयऱ जऱ सऱकतऱ है । कृषऱ-पऱरसऱथतऱकऱ के मऱनकों पर आधऱरतऱ, यह एक वऱवऱधऱ कृषऱपरणऱली है जऱ फसलों, पेड़ों और पशुधन कऱे एकीकृत करतऱ है, जसऱसे कऱर्यऱत्मक जैव वऱवऱधऱतऱ के इषुटतम उपयऱग कऱे अनुमतऱ भऱलऱतऱ है ।
- यह **मटऱटऱ कऱे उरवरतऱ और पर्यऱवरणीय स्वऱसऱथ्य** कऱे बढऱने तथऱ गरीनहऱउस गैस उत्सर्जन कऱे कम करने यऱ न्यून करने जैसे कई अन्य लऱभ परदऱन करतऱे हुए **कसऱऱनों कऱे आय बढऱने में सऱहऱयक** है ।
 - कृषऱ के इस दृषुटकऱेण कऱे एक जऱपऱनी कसऱऱन और दऱरशनकऱे **मऱसऱनऱबू फुकुओकऱ (Masanobu Fukuoka)** ने 1975 में अपनी पुसुतक द वन-सुटऱों रेवऱल्यूशन में पेश कऱयऱ थऱ ।
- यह खेतों में यऱ उसके आसपऱस के कषेत्रों में मौजूद प्राकृतकऱे यऱ पऱरसऱथतऱकऱे तंत्र पर आधऱरतऱ हऱते हैं । अंतरऱऱष्ट्रीय स्तर पर प्राकृतकऱे खेती कऱे पुनर्यऱोजऱ कृषऱ कऱे एक रूप मऱनऱ जऱतऱ है, जऱे ग्रह कऱे बचऱने के लयऱे एक परमुख रणनीतऱ है ।
- इसमें भूमऱ परथऱओं कऱे परबंधन और मटऱटऱ एवं पौधों में वऱतऱवरण से कऱरबन कऱे अवशऱषतऱ करने कऱे कषमतऱ हऱतऱ है, जसऱसे यह हऱनकऱरक के बजऱय वऱसुतव में उपयऱगेगी है ।
- भऱरत में [परंपरऱगत कृषऱ वऱकऱस योजनऱ \(PKVY\)](#) के तहत प्राकृतकऱे खेती कऱे **भऱरतीय प्राकृतकऱे कृषऱ पदधतऱ कऱर्यकऱरम (BPKP)** के रूप में बढऱवऱ दऱयऱ जऱतऱ है ।
 - BPKP योजनऱ कऱे उद्देश्य बऱहर से खरीदे जऱने वऱले आदऱनों कऱे कम कर पऱरंपरकऱे स्वदेशी परथऱओं कऱे बढऱवऱ देनऱ है ।
- प्राकृतकऱे खेती कऱे आशय पदधतऱ, परथऱओं और उपज में वृद्धऱ संबंधी प्राकृतकऱे वजऱजऱन से है तऱकऱे कम सऱधनों में अधकऱे उत्पादन कऱयऱ जऱ सके ।



COMPONENTS OF NATURAL FARMING



Beejamrit

The process includes treatment of seed using cow dung, urine and lime based formulations.

Whapasa

The process involves activating earthworms in the soil in order to create water vapor condensation.



Jivamrit

The process enhances the fertility of soil using cow urine, dung, flour of pulses and jaggery concoction.

Mulching

The process involves creating micro climate using different mulches with trees, crop biomass to conserve soil moisture.

Plant Protection

The process involves spraying of biological concoctions which prevents pest, disease and weed problems and protects the plant and improves their soil fertility.

■ उद्देश्य:

- लागत में कमी, कम जोखिम, समान उपज, इंटर-क्रॉपिंग से अर्जति आय द्वारा किसानों की शुद्ध आय में वृद्धि करके खेती को व्यवहार्य और अनुकूल बनाना।
- किसानों को खेत, प्राकृतिक और घरेलू संसाधनों का उपयोग कर आवश्यक जैविक आदानों को तैयार करने के लिये प्रोत्साहित करना तथा उत्पादन लागत में भारी कटौती करना।

■ महत्त्व:

○ उत्पादन की न्यूनतम लागत:

- इसे रोजगार बढ़ाने और ग्रामीण विकास की गुंजाइश के साथ एक लागत-प्रभावी कृषि पद्धति/प्रथा माना जाता है।

○ बेहतर स्वास्थ्य की सुनिश्चिता करना:

- चूँकि प्राकृतिक खेती में किसी भी सिंथेटिक रसायन का उपयोग नहीं किया जाता है, इसलिये स्वास्थ्य जोखिम और खतरे समाप्त हो जाते हैं। साथ ही भोजन में उच्च पोषक तत्त्व होने से यह बेहतर स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है।

○ रोजगार सृजन:

- प्राकृतिक खेती नए उद्यमों, मूल्यवर्द्धन, स्थानीय क्षेत्रों में विपणन आदि में रोजगार के सृजन में सहायक है। प्राकृतिक खेती से प्राप्त अधिशेष का निवेश गाँव में ही किया जा सकता है।
- चूँकि इसमें रोजगार सृजन की क्षमता है, जिससे ग्रामीण युवाओं का पलायन रुकेगा।

○ पर्यावरण संरक्षण:

- यह बेहतर मृदा जीव विज्ञान, बेहतर कृषि जैव विविधता और बहुत छोटे कार्बन एवं नाइट्रोजन पदचिह्नों के साथ जल का अधिक न्यायसंगत उपयोग सुनिश्चिता करती है।

○ जल की कम खपत:

- विभिन्न फसलों के साथ प्रतिक्रिया करके यह एक-दूसरे की मदद करते हैं और वाष्पीकरण के माध्यम से अनावश्यक जल के नुकसान को रोकने के लिये मिट्टी को कवर करते हैं, प्राकृतिक खेती 'प्रतिबुद्ध फसल' की मात्रा को अनुकूलित करती है।

○ मृदा स्वास्थ्य को पुनर्जीवित करना:

- प्राकृतिक खेती का सबसे तात्कालिक प्रभाव मिट्टी के जीव विज्ञान- रोगाणुओं और अन्य जीवित जीवों जैसे केंचुओं पर पड़ता है। मृदा स्वास्थ्य पूरी तरह से उसमें रहने वाले जीवों पर निर्भर करता है।

○ पशुधन स्थरिता:

- कृषि प्रणाली में पशुधन का एकीकरण प्राकृतिक खेती में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है और पारस्थितिकी तंत्र के पुनर्चरण में मदद करता है। जीवामृत और बीजामृत जैसे इको-फ्रेंडली बायो-इनपुट गाय के गोबर और मूत्र तथा अन्य प्राकृतिक उत्पादों से तैयार किये जाते हैं।

○ लचीलापन:

- जैविक कार्बन, कम/न्यून जुताई और पौधों की विविधता की मदद से मिट्टी की संरचना में परिवर्तनगंभीर सूखे जैसी चरम स्थितियों में भी पौधों की वृद्धि में सहायक हो सकता है एवं चक्रवात के दौरान गंभीर बाढ़ तथा वायु द्वारा होने वाली क्षति को कम किया जा सकता है।

- मौसम की चरम सीमाओं के खिलाफ फसलों को लचीलापन प्रदान कर प्राकृतिक खेती किसानों पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

■ संबंधित पहल:

- **बारानी क्षेत्र विकास (RAD):** यह उत्पादकता बढ़ाने और जलवायु परिवर्तनशीलता से जुड़े जोखिमों को कम करने के लिये एकीकृत कृषि प्रणाली (IFS) पर केंद्रित है।
- **कृषि वानिकी पर उप-मशिन (SMAF):** इसका उद्देश्य किसानों को जलवायु सुगमता और आय के अतिरिक्त स्रोतों के लिये कृषि फसलों के साथ-साथ बहुउद्देश्यीय पेड़ लगाने हेतु प्रोत्साहित करना है, साथ ही लकड़ी आधारित फीडस्टॉक और हर्बल उद्योग को बढ़ावा देना है।
- जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों से निपटने हेतु कृषि को लचीला बनाने के लिये तकनीकों का विकास, प्रदर्शन और प्रसार करने के लिये **सतत कृषि पर राष्ट्रीय मशिन (NMSA)** प्रारंभ किया गया।
- **उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के लिये मशिन ऑरगेनिक वैल्यू चेन डेवलपमेंट (MOVCDNER):** यह एक **केंद्रीय क्षेत्र की योजना** है, यह NMSA के तहत एक उप-मशिन है, जिसका उद्देश्य प्रमाणित जैविक उत्पादन को वैल्यू चेन मोड में विकसित करना है।
- **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY):** इसे वर्ष 2015 में जल संसाधनों के मुद्दों को संबोधित करने और एक स्थायी समाधान प्रदान करने के लिये शुरू किया गया था जो 'प्रता बूँद अधिक फसल' की परिकल्पना करती है।
- **हरित भारत मशिन:** इसे वर्ष 2014 में **जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्ययोजना (NAPCC)** के तहत लॉन्च किया गया था, जिसका प्राथमिक उद्देश्य भारत के घटते वन आवरण की रक्षा, पुनर्स्थापना और उसमें वृद्धि करना था।

प्राकृतिक खेती और जैविक खेती के बीच अंतर

जैविक खेती	प्राकृतिक खेती
जैविक खेती में जैविक उर्वरक और खाद जैसे- कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट, गाय के गोबर की खाद आदि का उपयोग किया जाता है और बाहरी उर्वरक का खेतों में प्रयोग किया जाता है।	प्राकृतिक खेती में मिट्टी में न तो रासायनिक और न ही जैविक खाद डाली जाती है। वास्तव में बाहरी उर्वरक का प्रयोग न तो मिट्टी में और न ही पौधों में किया जाता है।
जैविक खेती के लिये अभी भी बुनियादी कृषि पद्धतियों जैसे- जुताई, गुड़ाई, खाद का मशिरण, नरिाई आदिकी आवश्यकता होती है।	प्राकृतिक खेती में मिट्टी की सतह पर ही रोगाणुओं और केंचुओं द्वारा कार्बनिक पदार्थों के अपघटन को प्रोत्साहित किया जाता है, इससे धीरे-धीरे मिट्टी में पोषक तत्वों की वृद्धि होती है।
व्यापक स्तर पर खाद की आवश्यकता के कारण जैविक खेती अभी भी महँगी है और इस पर आसपास के वातावरण व पारिस्थितिक का प्रभाव पड़ता है; जबकि प्राकृतिक कृषि एक अत्यंत कम लागत वाली कृषि पद्धति है, जो स्थानीय जैव विविधता के साथ पूरी तरह से अनुकूलित हो जाती है।	प्राकृतिक खेती में न जुताई होती है, न मिट्टी को पलटा जाता है और न ही उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है तथा किसी भी पद्धति का ठीक उसी तरह नहीं अपनाया जाता है जैसे प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र में होता है।

आगे की राह

- विश्व की **जनसंख्या वर्ष 2050 तक लगभग 10 बिलियन तक बढ़ने का अनुमान** है। संभावना है कि वर्ष 2013 की तुलना में कृषि मांग 50% तक बढ़ जाएगी, ऐसी स्थिति में कृषि-पारिस्थितिकी जैसे 'समग्र' दृष्टिकोण की ओर एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया, कृषि वानिकी, जलवायु-स्मार्ट कृषि और संरक्षण कृषि की आवश्यकता है।
- कृषि बाजार के **बुनियादी ढाँचे को मज़बूत करने** और सभी राज्यों में खाद्यान्न और गैर-खाद्यान्न फसलों के लिये खरीद तंत्र का वसितार करने की आवश्यकता है।
- चयनित फसलों के लिये प्राइस डेफिसिएंसी पेमेंट सिस्टम का कार्यान्वयन करना। 'एमएसपी पर बेचने का अधिकार' पर कानून बनाने या तत्काल ध्यान देने की ज़रूरत है।
- **महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGNREGA)** को खेती की लागत को कम करने के लिये कृषि कार्य से भी जोड़ा जाना चाहिये, जो पछिले कुछ वर्षों में तेज़ी से बढ़ी है।

स्रोत: पीआईबी